अनुशंसा

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु-शोध-प्रबंध को परीक्षा हेतु अग्रेषित किया जाए।

दि. 25/5/98

अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर।

प्रतिज्ञापत्र

मैं यह प्रमाणित करती हूँ कि, डॉ . पांडुरंग पाटील के निर्देशन में `मुद्राराक्षस के नाटकों में प्रयोगधर्मिता' लघु-शोध-प्रबंध मैंने शिवाजी विश्वविद्यालय की एम् .फिल्. उपाधि के हेतु लिखा है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं और वे सर्वथा मेरे अध्ययन, अनुसंधान एवं चिंतन की उपज हैं। यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्णत: मेरी अध्यवसायिता की उपज है। यह कृति इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

कोल्हापुर

दि. 25/5/98

Panshikar
(कु.चित्रा पणशीकर)
शोधछात्रा

प्रमाणपत्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि, कु.चित्रा पणशीकर ने मेरे निर्देशन में 'मुद्राराक्षस के नाटकों में प्रयोगधर्मिता' लघु-शोध-प्रबंध शिवाजी विश्वविद्यालय की एम् .फिल्. उपाधि के हेतु लिखा है। जो तथ्य प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सत्य हैं। संपूर्ण लघु-शोध-प्रबंध को पढ़कर ही मैं यह प्रमाणपत्र दे रहा हूँ। कु.चित्रा पणशीकर के शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह संतुष्ट हूँ।

कोल्हापुर

दि. २५/५/१४

(डॉ. पांडुरंग पाटील)
शोधनिर्देशक

मुद्राराक्षस

प्राक्कथन

रूपरेखा -

`साहित्य समाज का दर्पण है' यह कथन साहित्य की किसी अन्य विधा के लिए संभवत: पूरा न भी उतरता हो, किन्तु नाटक के लिए तो सर्वथा सत्य है। अन्य साहित्य विधाओं की अपेक्षा नाटक की विशिष्टता अनन्य साधारण है। नाटक का केंद्रबिंदु मानव है और उसके हर पहलू का विश्लेषण कर उसे यथार्थ रूप में समाज के सामने रखना नाटककार का कर्तव्य है।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है कि उन नाटकों में अतीत के गुणगान को महत्त्व नहीं दिया है। स्वातंत्र्योत्तर नाटकाकारों ने अतीत को साथ लेकर नाटक को आधुनिकता के साथ पिरोया है।

वर्तमान समय में गद्य साहित्य की विविध विधाओं में नाटक सर्वाधिक सशक्त, समृद्ध और लोकप्रिय विधा है। इसका महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि यह विधा अपने आसपास को , रोजमर्रा की जिन्दगी की तमाम घटनाओं को समेटती है और आम आदमी की भाषा में बात करती है। नाटक विधा सीमित दायरे में बृहद् जीवन की अभिव्यक्ति करने में सक्षम है।

मुद्राराक्षस एक सृजनशील साहित्यकार है। इनके नाटकों में यथार्थ जीवन का चित्रण हुआ है। जिस प्रकार वे सधे हुए नाटककार हैं उसी प्रकार पत्रकार भी रहे हैं और आकाशवाणी पर काम भी कर चुके हैं। अपने साहित्यिक जीवन में उन्होंने नाटक, कहानी, कविता, उपन्यास, आलोचना, हास्यव्यंग्य, इतिहास तथा बालसाहित्य आदि विभिन्न विधाओं पर कलम चलाकर समाज का चित्रण प्रस्तुत किया है। उनका साहित्य यथार्थ की भावभूमि पर खड़ा है। उन्होंने समाज में जो देखा, परखा और भोगा उसका सही चित्रण साहित्य में किया है।

मुद्राराक्षस ने निम्न तथा मध्यवर्गीयों का चित्रण अपने साहित्य में किया है। स्वातंत्र्योत्तर काल में उच्चवर्गीयों द्वारा निम्न वर्गियों का जो शोषण होता रहा उसी का चित्रण किया है। शासन व्यवस्था और

राजनीति के चंगुल में फंसकर जनता पीसती रही है। भ्रष्ट-समाज-प्रणाली की चोट हर एक को मिलती रही है। अत: समाज में घटित इन घटनाओं को उन्होंने अपने साहित्य का केंद्र माना और उसका यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करने में वे सफल रहें।

प्रेरणा-

प्रारंभ से ही मेंरी रुचि नाटक में रही है। स्नातकोत्तर परीक्षा के पश्चात् मुझमें अनुसंधान के प्रति जिज्ञासा जागी तो मैंने नाटक विधा चुनना पसंद किया। हम जिस युग में जिन परिस्थितियों के बीच जी रहे हैं उसका वास्तव चित्रण नाटक में उपलब्ध होता है। इसके अतिरिक्त नाट्यविधा में अपनी अलग पहचान रखनेवाले मुद्राराक्षस के नाटकों ने मुझे आकर्षित किया और शोध के लिए प्रेरित किया। मुद्राराक्षस के नाटकों में चित्रित समाज की सही अभिव्यक्ति ने मुझे प्रभावित किया। मुद्राराक्षस के नाटकों में चित्रित समाज की सही अभिव्यक्ति ने मुझे प्रभावित किया। अत: मुद्राराक्षस के असंगत तथा नौटंकी नाटकों पर अनुसंधान करने का मैंने निश्चय किया।

विषयचयन-

मुद्राराक्षस एक सशक्त नाटककार होकर भी समीक्षा की दृष्टि से उनका साहित्य उपेक्षित ही रहा है। आज तक इनके नाट्य साहित्य के चार असंगत नाटकों पर केवल एक प्रबंध लिखा गया है। इनका साहित्य इनकी बहुआयामी सृजनशीलता की पहचान है। विविधोन्मुखी समाज का चित्रण इनके नाट्य साहित्य की विशेषता है। मुद्राराक्षस जैसे प्रख्यात असंगत नाटककार ने नौटंकी पर भी सफलता से कलम चलाई है, अत: इनकी रचनाओं पर अनुसंधान होना जरुरी था। श्री.राजेन्द्र पोवार द्वारा विषय सूचीत करने पर गुरुवर्य डॉ.पांडुरंग पाटील जी से सलाह मशवरा कर उनके शोध निर्देशन में `मुद्राराक्षस के नाटकों में प्रयोगधर्मिता' इस शीर्षक पर मैंने अपना शोध कार्य शुरु किया।

इस विषय का अध्ययन करते समय मेरे मन में निम्नांकित सवाल उभर आए थे -

1) मुद्राराक्षस का व्यक्तित्व कैसा रहा होगा ?

2) समसामयिक परिस्थितियों का इनके साहित्य पर कितना प्रभाव पड़ा होगा ?

3) मुद्राराक्षस के असंगत नाटकों में व्यक्ति की मानसिकता कैसी है और क्यों ?

4) मुद्राराक्षस ने नौटंकियों द्वारा किस प्रकार शासन व्यवस्था तथा राजनीति के खोखलेपन को उभारा है ?

5) बहुमुखी प्रतिभा संपन्न होकर भी समीक्षकों की दृष्टि में मुद्राराक्षस उपेक्षित क्यों रहे ?

जैसे-जैसे अध्यायों के अनुसार पढ़ती गई कुछ सवाल सुलझते गए और कुछ उलझे रहे। विवेचन की सुविधा को ध्यान में लेकर प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध पाँच अध्यायों में विभाजित किया है -

प्रथम अध्याय `मुद्राराक्षस : व्यक्तित्व और सृजनशीलता' है। इसमें उनके जीवन, परिवार, नौकरी के बारे में चर्चा करते हुए, उनकी बहुमुखी प्रतिभा की आलोचना की गई है। उन्होंने साहित्य विधाओं पर सफलता से कलम चलाई है, इसका परिचय देकर आलोच्य नाटकों पर दृष्टि डाली है।

द्वितीय अध्याय `मुद्राराक्षस के नाटकों का कथ्य' है। इसमें मुद्राराक्षस के आलोच्य नाटक `तिलचट्टा', `मरजीवा', योअर्स फेथफुली', `तेन्दुआ', `सन्तोला', `आला अफसर', तथा `डाकू' की कथावस्तु के साथ, उनके लिखने के पीछे होनेवाले प्रयोजन को मुखरित करने का प्रयास किया है।

तृतीय अध्याय `मुद्राराक्षस के नाटकों में मनोवैज्ञानिकता' का है। इसमें `मनोविज्ञान' शब्द, अर्थ, व्याख्या प्रस्तुत करते हुए, उसका महत्त्व, साहित्य तथा नाटक से मनोविज्ञान के सम्बन्ध को प्रस्तुत किया है। साथ ही मुद्राराक्षस के आलोच्य नाटकों में चित्रित मनोविज्ञान के महत्त्वपूर्ण पहलूओं पर विचार किया है। मुद्राराक्षस के नाटकों में दिखाई देनेवाले मनोविकार, मनोविकृति, मनोविक्षिप्तता, मनोरचनाएँ आदि का विवेचन

कर स्वप्न, भीड़, फैशन, खण्डित व्यक्तित्व, पूर्वदीप्ति, आत्महत्या, जिज्ञासा आदि मनोवैज्ञानिक आयामों पर दृष्टि डाली है।

चतुर्थ अध्याय `मुद्राराक्षस के नाटकों में प्रयोगधर्मिता` नाम से अभिहित है। इसमें `प्रयोग` शब्द का अर्थ, प्रयोग और प्रयोगधर्मिता को स्पष्ट किया है। मुद्राराक्षस के असंगत नाटक तथा नौटंकी नाटकों में वस्तुविन्यस्त, चरित्रगत, संवादीय, भाषाशिल्पगत, शब्द शिल्पगत, मुहावरे-कहावतें, गीत-संगीत योजना, प्रतीक, बिम्ब तथा शीर्षकों के अभिनव प्रयोग आदि पर विचार करते हुए मुद्राराक्षस की शिल्पगत विशिष्टता को प्रतिपादित किया है।

पंचम अध्याय `मुद्राराक्षस के नाटकों में मंचीयता` है। इसमें नाटक और रंगमंच का परस्पर सम्बन्ध, असंगत तथा नौटंकी नाटकों के रंगमंचीय उपकरण मंचसज्जा, वेशभूषा, अभिनय, ध्वनि-प्रकाश योजना, दर्शकीय-पाठकीय संवेदना आदि के परिप्रेक्ष्य में मुद्राराक्षस के नाटकों का विवेचन किया है।

प्रबंध के अंत में `उपसंहार` दिया है, जिसमें अध्यायों के निष्कर्ष समन्वित रूप में दर्ज है।

प्रबंध की मौलिकता -

मुद्राराक्षस ने नाटकों में समकालीन जीवन की व्यापक व्याख्या प्रस्तुत की है। प्रयोगिकता की दृष्टि से मुद्राराक्षस के नाटक मौलिक है। उन्होंने बदलते हुए जीवनमूल्यों का बड़ा यथार्थ और मार्मिक चित्रण किया है। उन्होंने बदलते युग के अनुरुप नाटक लिखें जिसमें विषयों की अभिव्यक्ति सूक्ष्म रही। मुद्राराक्षस के नाटकों केा लेकर प्रबंध में जो कार्य किया है उसकी मौलिकता निम्नांकित है -

1) बहुमुखी प्रतिभासंपन्न नाटककार मुद्राराक्षस के व्यक्तित्व तथा सृजनशीलता पर प्रकाश डाला है।

2) मुद्राराक्षस के असंगत नाटकों के साथ नौटंकी नाटकों को आलोचना के लिए लिया गया है।

3) मुद्राराक्षस के नाटकों के कथ्य, शिल्प, शैली, मंचीयता तथा मनोविज्ञान के साथ प्रयोगधर्मिता को विशेष विश्लेषित किया है।

4) शोध-कार्य को अधिक स्पष्ट करने के लिए छायाचित्रों के साथ उनकी मुलाकात को जो श्री.जयवंत जाधव ने ली थी, परिशिष्ट के रूप में छापा गया है।

ऋणनिर्देश

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध आदरणीय गुरुदेव डॉ.पांडुरंग पाटील, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर, के आत्मीय निर्देशन का प्रतिफलन है। अपने कार्य में व्यस्त होकर भी लघुशोध प्रबंध के विषय-चयन से लेकर उसकी संपूर्ति तक उनका सम्यक मार्गदर्शन रहा है। उनकी आत्मियता मेरे मन को उत्प्रेरित कर सक्रिय बनाती रही है। इसीलिए मैं उनके प्रति हार्दिक ऋणी हूँ।

इस कार्य में श्रद्धेय पिताश्री श्री.धुंडिराज पणशीकर तथा माताजी श्रीमती मंगला पणशीकर की प्रेरणा से ही मैं आगे बढ़ पाई हूँ। मेरे भाई अभिजीत तथा अभिराम की मुझे हमेशा सहायता मिलती रही है। मेरे भावी पति मिलिंद ने मुझे काम के प्रति श्रद्धा और भावना की सीख दी है। तो मेरे श्वसूर श्री.मथुकर गोसावी तथा सास श्रीमती मीना गोसावी ने मुझे प्रबंध के प्रति निष्ठा रखने के लिए प्रेरित किया है। इन सभी के प्रति मैं हमेंशा ऋणी रहूँगी।

इस शोध कार्य के लिए श्रद्धेय श्री.जयवंत जाधव तथा गुरुवर डॉ. गजानन सुर्वे जी अगर अपने निजी ग्रंथालय से मुझे किताबें प्राप्त नहीं कराते तो मेरा शोध-कार्य पूरा होना असंभव था। श्रीमती जयप्रभा जाधव तथा उनके बच्चों की मुझे हमेंशा छोटे-मोटे कार्यों में मदद मिलती रही है। कु.कामायनी सुर्वे ने भी मुझे सहायता की है। इन सभी के प्रति मैं हार्दिक ऋणी हूँ।

शोधकार्य में मेरी सहायता करनेवाले श्रद्धेय डॉ.अर्जुन चव्हाण, प्रा.अ. अ. पोतदार, प्रा.श्रीमती दिव्यवीर के हमेंशा शुभाशीष रहे हैं। इनके प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

इनके सिवाय राजेन्द्र पवार, अनिल सालुंखे, अरुण गंभीरे, प्रशांत भाट, विजया कांबळे , अनिता पाटील, मलिका मिरजकर, मनिषा भोसले, दीप्ति लोहकरे, रुपा भोसले, शामल कोळेकर, पद्मश्री मुजुमदार ने मुझे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहायता की है। अत : इनकेप्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ।

शोध कार्य की पूर्ति के लिए शिवाजी विश्वविद्यालय का ग्रंथालय, राजाराम कॉलेज का ग्रंथालय, ग्रंथपाल तथा कर्मचारी सभी के प्रति मैं आभारी हूँ।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में समाविष्ट नाटकों के लेखक मुद्राराक्षस जी, विविध सहायक ग्रंथों के लेखक, संपादक आदि के प्रति मैं आभारी हूँ। अन्त में आत्मीयता और तत्परता से सुचारु रूप में प्रबंध का टंकलेखन करनेवाले श्री मिलिंद भोसले के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ

Panshikar
(कु.चित्रा पणशीकर)
शोधछात्रा

अनुक्रमणिका

पृष्ठ संख्या

प्रथम अध्याय :- मुद्राराक्षस : व्यक्तित्व एवं सृजनशीलता 1 से 16

1.1 व्यक्तित्व -

1.1.1 जन्म और नाम

1.1.2 परिवार

1.1.3 शिक्षा एवं नौकरी

1.1.4 लेखनकला तथा निर्देशन

1.1.5 अन्य।

1.2 सृजनशीलता

1.2.1 उपन्यास

1.2.2 कहानी संग्रह

1.2.3 नाटक

1.2.4 रेडिओ नाटक

1.2.5 बालसाहित्य

1.2.6 हास्यव्यंग्यसंग्रह

1.2.7 आलोचना।

निष्कर्ष।

द्वितीय अध्याय :- मुद्राराक्षस के नाटकों का कथ्य 17 से 33

2.1 तिलचट्टा

2.2 मरजीवा

2.3 योअर्स फेथफुली

2.4 तेन्दुआ

2.5 सन्तोला

2.6 आला अफसर

2.7 डाकू ।

निष्कर्ष।

पृष्ठ संख्या

तृतीय अध्याय :- मुद्राराक्षस के नाटकों में मनोवैज्ञानिकता 34 से 74

3.1 मनोविज्ञान शब्द, अर्थ , परिभाषा।

3.2 मनोविज्ञान की उपयोगिता।

3.3 साहित्य एवं मनोविज्ञान।

3.4 मनोविश्लेषण -

i) इदम् ii) अहम् iii) पराहम् ।

3.5 विविध मनोविकार -

1) क्रोध 2) भय 3) चिन्ता 4) संशय

5) ईर्ष्या 6) संत्रास 7) घृणा 8) हँसी ।

3.6 विभिन्न मनोविकृतियाँ -

अ) यौन विकृतियाँ -

1) स्वपीड़न 2) परपीड़न 3) विलिंगी वस्त्रधारण रति

4) स्पर्शासक्ति 5) नग्नतादर्शन रति 6) शव-रति

7) नपुंसकता 8) पुरुषभाव प्रतिमा 9) पुरुष कामोन्माद

10) पशु-यौन-गमन 11) बलात्कार।

ब) भूलने की मनोविकृति।

क) मनोविक्षिप्तता।

3.7 मनोविज्ञान के अन्य आयाम -

1) खण्डित व्यक्तित्व का मनोविज्ञान 2) स्वप्न का मनोविज्ञान

3) भीड़ का मनोविज्ञान 4) फैशन का मनोविज्ञान 5) पूर्वदीप्ति मनोविज्ञान

6) आत्महत्या का मनोविज्ञान 7) स्वगत का मनोविज्ञान

8) बाह्यघटना का मनोविज्ञान 9) जिज्ञासा का मनोविज्ञान।

3.8 मनोरचनाएँ या रक्षायुक्तियाँ -

1) दमन 2)क्षति-पूर्ति 3)अंतःक्षेपण 4)विस्थापन 5)संक्षिप्तिकरण

6) वास्तविकता से पलायन 7)आक्रामकता।

निष्कर्ष।

पृष्ठ संख्या

चतुर्थ अध्याय :- मुद्राराक्षस के नाटकों में प्रयोगधर्मिता **75 से 119**

4.1 प्रयोग अर्थबोध।

4.2 प्रयोग की आवश्यकता।

4.3 प्रयोग का स्वरूप -

1) प्रयोग की प्रकृति 2)प्रयोग और प्रयोगधर्मिता।

4.4 शिल्पगत प्रयोग -

4.4.1 वस्तुविन्यस्त प्रयोग -

1) विषयगत प्रयोग 2) नाट्यसमीक्षा प्रयोग

3) कथ्यहीनतामूलक प्रयोग ।

4.4.2 चरित्रगत प्रयोग -

1) पात्रों की संख्या 2) पात्रों का नामकरण

3) लघु मानव अंकन 4) चरित्रचित्रण की विधियाँ।

4.4.3 संवादीय प्रयोग -

1) स्वगत कथन परक संवाद 2) खण्डित संवाद

3) निरर्थक संवाद 4) असम्बद्ध संवाद 5) संवादों में संवाद

6) गालीगलौच युक्त संवाद।

4.4.4 भाषा शिल्पगत प्रयोग -

1) पात्रानुकूल भाषा 2) काव्यात्मक भाषा 3) पुनरुक्त भाषा

4) पूर्वदीप्ति भाषा 5) प्रश्नार्थक भाषा 6) प्रतीकात्मक भाषा

7) विडम्बनात्मक भाषा 8) हास्यशैली।

4.4.5 वाक्यविन्यस्त प्रयोग -

1) छोटे वाक्य 2) लंबे वाक्य

3) अधूरे वाक्य 4)प्रश्नवाचक वाक्य

5) रिक्तिसूचक बिन्दु-चिन्हों से युक्त वाक्य

6) वाक्यविन्यास में विलोचन और विखंडन प्रयोग

7) अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग 8)संस्कृत वाक्यों का प्रयोग।

पृष्ठ संख्या

4.4.6 शब्दशिल्पगत प्रयोग

1) सामान्य बोलचाल के शब्द 2) अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग

3) अरबी शब्दप्रयोग 4) फारसी शब्दप्रयोग

5)संस्कृत शब्दप्रयोग।

4.4.7 मुहावरों और कहावतों का प्रयोग।

4.4.8 गीत-संगीत प्रयोग।

4.4.9 प्रतीक प्रयोग।

4.4.10 बिम्ब प्रयोग।

4.4.11 शीषकों के अभिनव प्रयोग।

निष्कर्ष।

पंचम अध्याय :- मुद्राराक्षस के नाटकों में मंचीयता **120 से 153**

5.1 नाटक और रंगमंच।

5.2 रंगमंच : शब्द, अर्थ विकास।

5.3 रंगमंचीय उपकरण -

1) मंचसज्जा 2)अभिनयेता 3)वेशभूषा 4)प्रकाश योजना

5) ध्वनि एवं संगीत योजना 6) दर्शकीय तथा पाठकीय संवेदना।

5.4 मुद्राराक्षस के नाटकों में मंचीयता -

5.4.1 असंगत नाटकों में मंचीयता

5.4.2 नौटंकी नाटकों में मंचीयता।

निष्कर्ष

उपसंहार। **154 से 160**

संदर्भ ग्रंथ सूची। **161 से 164**

परिशिष्ट। **165 से 168**

† † †